Vol. 1; Issue 2; January-April 2023; ISSN No. 2583-6994

7

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षणः संभावनाएं एवं चुनौतियाँ (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में)

डॉ0 केवलानन्द काण्डपाल,
प्रधानाचार्य,
राजकीय इंटरमीडियट कालेज मंडलसेरा,
जनपद–बागेश्वरए उत्तराखंड, 263642
Email: kandpal_kn@rediffmail-com

सारांश

हाल ही में जारी असर (ASER) के 2022[1] के प्रतिवेदन के प्रारंभिक निष्कर्षों में पाया गया है कि बच्चों की पठन काबिलियत (Reading Ability) वर्ष 2012 से पूर्व के स्तर पर पहुँच गयी है, निःसंदेह कोरोना महामारी के कारण स्कूल बंदी का असर इसका एक अहम कारण हो सकता है परंतु अन्य कारणों की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। उत्तराखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थित सरकारी एवं निजी विद्यालयों के सन्दर्भ में कक्षा 3 से कक्षा 5 अधिगम स्तर भाषा विषय में 42.5 प्रतिशत तथा गणित विषय में 37.4 प्रतिशत बताया गया है। बागेश्वर जनपद इस मामले में राज्य के सभी जिलों में भाषा में 32.9 प्रतिशत के साथ सबसे निचले पायदान पर है और गणित विषय में 38.6 प्रतिशत के साथ सातवें क्रम पर है। इसी प्रकार कक्षा 6 से कक्षा 8 में भाषा विषय में अधिगम स्तर 73.2 प्रतिशत तथा गणित विषय में 37.3 प्रतिशत बताया गया है। बागेश्वर जनपद भाषा विषय में 72.0 प्रतिशत के साथ 11वें स्थान पर और गणित विषय में 46.6 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। तमाम प्रयासों के बावजूद इस गिरावट के कारणों की जांच–पड़ताल जरुरी हो जाती है। इसके कतिपय कारण हो सकते हैं परन्तु एक महत्वपूर्ण कारण यह हो सकता है कि विद्यालय में बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा को स्थान नहीं मिल पाता हो। दरअसल ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले बच्चों की घर की भाषा/मातृभाषा एवं स्कूल की भाषा में अंतर पाया जाता है और इन बच्चों की संख्या सारभूत रूप से अधिक होती है। यूनेस्को के एक सम्मलेन में कहा गया 'विश्व की लगभग 40 प्रतिशत जनसँख्या को उस भाषा में पढने–लिखने के अवसर नहीं मिलते हैं जिसमें वे बोलते–समझते हैं, और यह उनकी मातृभाषा है।'[2] मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण सम्बन्धी विगत अध्ययनों से संकेत मिलते हैं कि मातृभाषा में शिक्षण करने से

विद्यार्थी विषयगत अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में सफल रहते हैं। शिक्षाविद भी इस बात की ताकीद करते हैं। वस्तुतः बच्चा जब 5–6 साल की उम्र में विद्यालय का हिस्सा बनता है तो अपने घर की भाषा/मातृभाषा में बोलना, सोचना–समझना बेहतर तरीके से कर रहा होता है। बच्चे के सीखने के लिए यह एक महत्वपूर्ण निवेश हो सकता है। विद्यालय में अपनी घर की भाषा/मातृभाषा से इतर भाषा में शिक्षण होने के कारण, बच्चे को विद्यालय की भाषा में पुनः शुरुआत करनी होती है। इस वजह से एक बहुमूल्य निवेश व्यर्थ चला जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों की मातृभाषा/घर की भाषा में शिक्षण का निर्देश देती है। इस अनुशंसा के गहन शिक्षणशास्त्रीय एवं समावेशी निहितार्थ हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में मातृभाषा माध्यम से शिक्षण के लिए एक प्रभावी फ्रेमवर्क निर्धारित करने की नितान्त आवश्यकता है। शिक्षकों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति–निर्धारकों को मातृभाषा माध्यम से शिक्षण की संवेदनशीलता को आत्मसात करने की जरुरत है, इसकी चुनौतियों को संबोधित करने की जरुरत है। इसके लिए बच्चों की मातृभाषा में शिक्षण/पठन सामग्री की उपलब्धता, शिक्षकों की तैयारी एवं सेवारत प्रशिक्षणों में इस दृष्टि से क्षमता संवर्धन और एक व्यवहारिक फ्रेमवर्क की जरुरत है। प्रस्तुत वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन में मातृभाषा माध्यम से शिक्षण की जरुरत, इसकी चुनौतियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है, इसके साथ–साथ मातृभाषा माध्यम से शिक्षण हेतु एक फ्रेमवर्क, मातृभाषा (L1) से विद्यालय निर्देशन की भाषा (LOI), संक्रमणीय सम्मिश्र मॉडल प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है। यह एक शुरूआती प्रस्ताव है, निश्चित रूप से इसमें परिमार्जन की संभावनाएं हमेशा बनी रहेंगी।

मुख्य शब्दः मातृभाषा, बहिष्करण, बहुभाषिकता, निर्देशन–भाषा, अस्मिता

शब्द संक्षेपः L1–बच्चे की घर की भाषाध्मातृभाषा।
L2–विद्यालय निर्देश की भाषा, जो बच्चे की मातृभाषा से भिन्न है।
L3–विद्यालय की दूसरी भाषा।
LOI–निर्देशन की भाषा।

प्रस्तावना

भारत द्वारा अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 में परिलक्षित वैश्विक शैक्षिक लक्ष्य के अनुसार विश्व में 2030 तक 'सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा को बढ़ावा दिये जाने' का लक्ष्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार '2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो कि किसी से पीछे नहीं है, एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहां किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले शिक्षार्थियों को समान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता कि शिक्षा

उपलब्ध हो।'[3] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा में कम से कम प्रारम्भिक स्तर और बाद में इससे भी आगे शिक्षा मुहैया कराने की अपेक्षा की गयी है। इस नीति में भाषा की केन्द्रीयता को इस तथ्य से भी समझा जा सकता है कि 108 पृष्ठों के इस दस्तावेज में भाषा शब्द 206 बार आया है, 126 बार इसे बहुबचन में प्रयुक्त किया गया है। यह इस बात को स्थापित करता है कि किसी एक भाषा और संस्कृति कि बात न करके सभी भाषाओं पर केन्द्रित बहुलता पर जोर दिया गया है। अपनी भाषा के माध्यम से बच्चा आस–पास की दुनियाँ को जानने–समझने की कोशिश करता है, शैक्षिक अनुभवों को ग्रहण करता है, समझ निर्मित करता है, अभिव्यक्त करता है। वस्तुतः बच्चे की भाषा विद्यालय की निर्देश की भाषा से फरक होती है, बच्चों की घर की भाषा में विविधता होने से बहुभाषी–कक्षाओं की निर्मिति होती है। इस नीति के मार्गदर्शक सिद्धांतों में से एक अहम सिद्धान्त 'बहु–भाषिकता और अध्यापन के कार्य में भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन'[4] कहा गया है। भाषा सहित उन सभी कारको को चिन्हित किया गया है जो अलाभकर वर्गों/समूहों से आने वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में समावेशन में बाधा उत्पन्न करते है 'गुणवत्तापूर्ण स्कूलों तक पहुंच पाने में कमी, गरीबी, सामाजिक रीति–रिवाजों, प्रथाओं और भाषा सहित विभिन्न कारकों से नामांकन और प्रतिधारण की दरों पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है।'[5]

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बागेश्वर में सेवा–पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षणों में ऐसी बहुत सी परिचर्चाओं (बहुत बार तो गरमागरम बहसें भी) के अनुभव हैं जिनमें बच्चों की घर की भाषा/मातृभाषा को कक्षा–कक्ष में स्थान देने के बारे में विमर्श हुए हैं। इसके बाद जनपद के अति दुर्गम क्षेत्र में माध्यमिक विद्यालय में काम करने के दौरान के अवलोकन अनुभव हैं, जहां बच्चों की घर की भाषा/मातृभाषा विद्यालय परिवेश में अबाध रूप से चली आती थी, बच्चे अपनी घर की भाषा–बोली में खूब बात–चीत करते थे, चहकते थे परंतु कक्षा–कक्ष में जैसे ही शिक्षक बच्चों की घर की भाषा से इतर भाषा हिन्दी में बच्चों से अंतःक्रिया करते थे तो बच्चों की मुखरता गायब हो जाती थी। विज्ञान विषय का शिक्षण आंग्ल–भाषा माध्यम से होने पर कक्षा में केवल शिक्षक का स्वर ही सुनायी देता था, बच्चे इस भाषा के अभ्यस्त नहीं थे। आंग्ल–भाषा, एक तरह से बच्चों के लिए तृतीय भाषा ठहरती थी। वस्तुतः बच्चों की प्रथम भाषा–बोली विशेष एक्सेंट में बोली जाने वाली कुमायुनी भाषा है, हिन्दी दूसरी भाषा है। इससे मिलते–जुलते अनुभव वर्तमान वरिष्ठ मध्यमिक विद्यालय के रहे हैं। उक्त अवलोकन–अनुभवों को यहाँ साझा करने का मकसद यही है कि तमाम शिक्षणशास्त्रीय संभावनाओं, शिक्षा–शास्त्रियों की पुरजोर पैरवी और नीतिगत दस्तावेजों की सदिच्छाओं के बावजूद बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा को विद्यालयों/कक्षा–कक्ष में शिक्षण के माध्यम के रूप में व्यवहृत करने का सपना पूर्णतः साकार नहीं हो सका है। इधर हाल ही में, 29 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हो गयी है। इस नीति में मातृभाषा/स्थानीय भाषा/घर की भाषा के द्वन्द्व में न पड़कर, बच्चे की घर की भाषा (जो प्रायः उसकी मातृभाषा ही होती है) को शिक्षण का माध्यम के रूप

में व्यवहृत करने की अनुशंसा की गयी है। अतः यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में निम्न अकादमिक जिज्ञासाओं के समाधान ढूँढने के क्रम में किया गया है–

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों की मातृभाषा माध्यम से शिक्षण हेतु की गयी अनुशंसाओं के निहितार्थों को समझना।
- मातृभाषा माध्यम से शिक्षण के सामाजिक एवं शिक्षण–शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य की जांच–पड़ताल करना।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा के माध्यम से शिक्षण की संभावनाओं एवं चुनौतियों को समझने का प्रयास करना।
- बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा माध्यम से शिक्षण हेतु उपयोगी एवं व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 घोषित होने के बाद, यह नीतिगत दस्तावेज, आगामी वर्षों तक, भारतीय शैक्षिक परिदृश्य में प्रमुख मार्गदर्शक दस्तावेज बना रहेगा। अतः यह समीचीन प्रतीत होता है कि इसके स्कूली शिक्षा से सरोकार रखने वाले विचारणीय पहलुओं पर विचार विमर्श किया जाए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैंय सभी बच्चों का शिक्षा की मुख्यधारा में समावेशन, विषयगत संप्राप्ति, विद्यालयी पाठ्यचर्या, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाएं, आदि। स्कूलों में शिक्षण माध्यम के रूप में बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा संबंधी विमर्श अहम स्थान रखता है, यह बच्चे की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में स्वीकृति एवं भागीदारी से जुड़ा हुआ है और बच्चे की भाषा को स्वीकार करने के साथ–साथ उसकी संस्कृति एवं अस्मिता की स्वीकार्यता से संबन्धित विमर्श भी है। यदि स्कूली शिक्षा की मुख्यधारा में सभी बच्चों का समावेशन करना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का महत्वपूर्ण सरोकार है (यह सुखद रूप से उत्साहवर्द्धक है) तो इस समावेशन में बाधक कारकों की जांच–पड़ताल करना, इसके लिए विमर्श करना बहुत जरूरी हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विद्यालयी पाठ्यचर्या में, कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों को केंद्रीय स्थान देने की बात कहती है, और यह बच्चों की भाषा/घर की भाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में लागू करके किया जा सकता है। वस्तुतः किसी विद्यालय और उसकी किसी विशेष कक्षा में नामांकन मात्र से समावेशन होना संभव नहीं है, वरन इसके लिए सीखने–सीखने की प्रक्रिया में सहभागिता, संप्राप्ति एवं सफलता भी इसके लिए जरूरी है। विद्यार्थियों की मातृभाषा/घर की भाषा को शिक्षण माध्यम बनाकर ऐसा किया जा सकता है। मातृभाषा माध्यम से शिक्षण और इसके विषयों की संप्राप्ति स्तर पर प्रभाव एवं अन्य प्रभावों के बारे में अध्ययन हुए हैं परंतु भारत में इस तरह के अध्ययनों की कमी नजर आती है। इसका एक कारण तो यही प्रतीत होता है कि मातृभाषा माध्यम से शिक्षण के बारे में अभी तक एक स्पष्ट नीति का अभाव रहा है, और जमीनी स्तर पर भी इस बारे में कोई गंभीर प्रयास आमतौर पर नजर नहीं आता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में, मातृभाषा के माध्यम से

शिक्षण की संभावनाओं एवं चुनौतियों की सैद्धान्तिक जांच–परख करना सम–सामयिक दृष्टि से आवश्यक हो जाता है। यह अंतिम नहीं है, इस विचार प्रवाह में बहुत सारे उपयोगी विचारों को आमंत्रित करने और समाहित करने की जरूरत के दृष्टिगत इस पर्चे को प्रस्तुत किया जा रहा है।

पृष्ठभूमि

मनुष्य जाति के मूल विभागों और उनके परस्पर सम्बन्धों का विश्लेषण करने वाले विद्वानों और भाषा–समाजशास्त्रियों की प्रमुख मान्यता है कि भाषा एक स्वभाव या आदत है। अगर भाषा आदत है, आदतन सीखी जाती है तो स्पष्टतः उसका संबंध मनुष्य के पीढ़ीगत संस्कारों से अवश्य ही होना चाहिए, अर्थात भाषा किसी समाज कि संस्कृति से उद्भूत एक व्यवस्था है। भारत एक बहु–सांस्कृतिक एवं बहु–भाषी देश है। वर्ष 1971 की जनगणना में भारत में 1652 भाषा–बोलियों की पहचान की गयी, जो पाँच विभिन्न भाषा परिवारों के अंतर्गत आती हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 1369 भाषा–बोलियाँ चिन्हित की गयी। 40 वर्षों की अवधि भारत में बहुत सी भाषा–बोलियाँ विलुप्त हो गयी हैं, विलुप्ति के कगार पर हैं। भारत में लगभग 121 भाषाएँ 10000 या इससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। इससे भारत में भाषा की विविधताध्बहुलता का एक अनुमान मिलता है। भाषा के व्यवहार पक्ष का अवलोकन किया जाए तो प्रशासनिक स्तर पर 13 भाषाएँ, प्रिंट मीडिया में 87 भाषाएँ, रेडियो प्रसारण में 71 भाषाएँ व्यवहृत की जाती हैं। देश में विद्यालयों में पठन–पाठन के माध्यम के रूप में 47 भाषाएँ ही प्रयोग में लायी जा रही हैं। इसका अर्थ है कि आज भी बहुत सी भाषाएँ (जो वस्तुतः बच्चों कि घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा ही हैं) पठन–पाठन के माध्यम के रूप में उपयोग में नहीं लायी जा रही हैं। सामाजिक संरचनावाद के प्रमुख पैरोकार लेव सिमनोविच वाइगोत्स्की (1896–1934) के अनुसार समाज के साथ अंतःक्रिया करके बच्चे का संज्ञानात्मक विकास होता है। इस अंतःक्रिया में भाषा एवं संस्कृति की मुख्य भूमिका होती है। वाइगोत्स्की संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा को एक उपकरण (Tool) मानते हैं, इसकी सहायता से बच्चा समाज के साथ अंतःक्रिया करते हुए संस्कृति के तत्वों को समझता है और ग्रहण करता है, भाषा के अभाव में व्यक्ति का संज्ञानात्मक विकास संभव नहीं है। वाइगोत्स्की ने प्रस्तावित किया कि 'ज्ञान पहले सामाजिक वातावरण में निर्मित होता है।'[6] एफ्फिओंग ने जापान में अपने एक अध्ययन में सुझाया है 'शिक्षार्थी की स्थानीय भाषा को कक्षा–कक्ष में व्यवहृत करने पर, बच्चे पाठ की अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।'[7] इसके लिए शिक्षक को बच्चे की भाषा–संस्कृति का सम्यक ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बच्चों की संस्कृति को समझने (भाषा संस्कृति का अहम तत्व है) और कक्षा–कक्ष में प्रयोग करने से विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में संलग्न करने में मदद मिल सकती है। अमरीका के एक अध्ययन अनुभव के आधार पर स्टोबलेंन एवं चांगचुन का सुझाव था 'अधिगमकर्त्ता की संस्कृति को गणित शिक्षण में समाहित करने की जरूरत है, जिससे अधिगमकर्त्ता की विषय में रुचि बढ़ायी जा सके और सीखना उनके लिए अधिक अर्थपूर्ण हो सके।'[8] इसी प्रकार गोर्गोरियो एवं प्लानस[9] ने अपने एक

अध्ययन के आधार पर कहा कि कक्षा–कक्ष में गणितीय ज्ञान की संरचना में भाषा का महत्व है।

साहित्यावलोकन

विगत 29 जुलाई 2020 को घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के गहन अनुशीलन के साथ–साथ–साथ यूनेस्को (UNESCO) के मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण सम्बन्धी प्रतिवेदनों एवं दस्तावेजों का अध्ययन भी इस निमित्त जरुरी था। इस परिप्रेक्ष्य में अध्ययनों का विश्लेषण किया गया, इनमें गोर्गोरियो एवं प्लानस (2001), मोस्च्कोविच (2002), मटंग (2003), स्टोब्लें एवं चौंगचुन (2009), गोर्गोरिओ एवं प्लानस (2011), इफ्फिओन्ग (2013), ली, वाट्स एवं फ्राव्ले (2015), न्जोर्गे (2017), इलियट एवं पेटों (2018), के अध्ययन प्रमुख हैं। ये अध्ययन दुनियां के अलग–अलग देशों में मातृभाषा माध्यम से शिक्षण और इसके विषयगत संप्राप्ति सम्बन्धी प्रभावों की जांच–पड़ताल से सम्बंधित हैं, के अध्ययन से अंतर्दृष्टि पुष्ट हुई कि बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा माध्यम से शिक्षण से न केवल बच्चे का शिक्षा की मुख्यधारा में समावेशन में मदद मिलती है वरन इसका असर बच्चे द्वारा अन्य विषयों की अवधारणाओं को जानने–समझने में मदद भी मिलती है। विद्यालयी कार्य–दायित्वों के सिलसिले में कक्षा–कक्ष अवलोकनों, शिक्षकों से विमर्श और विद्यार्थियों से निरंतर बात–चीत से यह तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आया कि बच्चों की घर की भाषा/मातृभाषा की कक्षा–कक्ष में निरंतर उपेक्षा की जाती है। बच्चों को अपनी मातृभाषा/घर की भाषा को त्याग कर विद्यालय की निर्देशन की भाषा (L2) से पुनः सीखने की शुरुआत करनी पड़ती है। बच्चे को विद्यालय निर्देशन की भाषा बोलना, पढ़ना और लिखना सीखना होता है, और इस भाषा में अन्य विषयों को सीखना होता है। बच्चे की घर की भाषा/विद्यालय की भाषा का बहुमूल्य निवेश उपयोग में नहीं लाया जाता। उक्त अध्ययनों में भी यह बात रेखांकित हुई है और इसका नकारात्मक प्रभाव विषयगत अवधारणाओं को सीखने–समझने में इंगित किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन पद्धतियों के समिश्र स्वरूप का है। विश्लेषण हेतु बच्चे की मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण का विषयगत संप्राप्ति पर प्रभाव संबंधी विगत अध्ययनों का गहन विश्लेषण करते हुए भारतीय संदर्भों में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण हेतु एक फ्रेम–वर्क प्रस्तावित किया गया है। यहाँ यह भी स्वीकार किया जाता है कि ये शुरुआती प्रस्ताव है, इसकी वैधता की जांच के गहन शोध की जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता।

मातृभाषा का शिक्षणशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

एक बच्ची/बच्चा विद्यालय जाने की उम्र तक अपनी मातृभाषा/घर की भाषा के सार्वभौमिक व्याकरण, वाक्य संरचना आदि की पक्की समझ विकसित कर चुके होते हैं। इसी उम्र में बच्चे अपने आस–पास के परिवेश के ज्ञान–विज्ञान की समझ बना रहे होते हैं, अपनी इस समझ को

अपने घर की भाषा/मातृभाषा में बताने में बहत हद तक सक्षम भी होते हैं और इसी भाषा में अपनी समझ का ताना–बाना, स्कीमा (Schema) विकसित कर लेते हैं। विद्यालय में बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा को स्थान न मिलने से यह बहुमूल्य निवेश (Input) व्यर्थ चला जाता है। संरचनावाद के सामाजिक संरचनावाद (Social Constructivism) शाखा के समर्थक, विद्यार्थी के भाषायी और सांस्कृतिक संदर्भों पर बहुत जोर देते हैं। इनका मानना है कि विद्यार्थी अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में ही ज्ञान की रचना बेहतर ढंग से कर सकते हैं और ऐसा ज्ञान विद्यार्थी के लिए अर्थपूर्ण होता है। वस्तुतः किसी भी व्यक्ति का सोचना–समझना, उस भाषा में सहजता से होता है, जिस भाषा को व्यक्ति अपनी दिनचर्या में बरतता है, जीता है। जिस भाषा का प्रयोग विद्यार्थी, विद्यालय में प्रवेश से पहले करता आया है, उसी भाषा में अंतःक्रिया करना, संवाद करना, सीखना–समझना उसके लिए सहज होता है। सीखने या ज्ञान निर्माण के क्रम में विद्यार्थी अपनी संस्कृति के संदर्भ में जांच–पड़ताल करते हुए अपनी ज्ञान/समझ का निर्माण करता है और इसको अपने घर की भाषा (प्रकारांतर से मातृभाषा) में अभिव्यक्त करने में सहजता महसूस करता है। ऐसी कोई भी भाषा, जो बच्चे के तात्कालिक परिवेश से जुड़ी हुई नहीं है, बच्चे की ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को बाधित करती है। जब अपनी भाषा (घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा) से भिन्न भाषा में बच्चा अपनी समझ बनाने में असफल रहता है तो उसे परीक्षा में लिखने की दृष्टि से, रटने की जरूरत पड़ती है, क्योंकि यह भाषा बच्चे की सोच–विचार की भाषा नहीं होती है। बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा का कक्षा में व्यवहार में न लाने के कारण बच्चे की अपनी भाषा की भाषायी समझ/सार्वभौमिक व्याकरण की समझ, अपने परिवेश के ज्ञान–विज्ञान की समझ व्यर्थ/बेकार चली जाती है और इस प्रकार से बच्चे को भाषायी और समझ स्तर पर एकदम शून्य से शुरुआत करनी पड़ती है।

मातृभाषा का समावेशी परिप्रेक्ष्य

बच्चे अपने परिवार में, आसपास के व्यस्कों से सूचना, निर्देश, आदेश एवं संकेत जिस रूप में प्राप्त करता है, उसमें भाषा की अहम भूमिका होती है। समाजीकरण के इस क्रम में बच्चा अपने परिवेश की 'भाषा–बोली' के माध्यम से प्राप्त सूचना, निर्देश, आदेश एवं संकेतों से अर्थ निर्मित करता है और यह अर्थ निर्मित भाषा के माध्यम से ही होती है। लगभग तीन–चार वर्ष की उम्र में बच्चे अपनी इस समझ को अपनी परिवेशीय भाषा–बोली में कमोवेश भाषायी कुशलता के साथ अभिव्यक्त भी कर लेता है और इस तरह से समाज की मुख्य धारा में बच्चे का समावेशन होता रहता है। व्यवहार में ऐसा क्यों होता है कि अपनी घर की भाषा–बोली में कुशल बच्चा, विद्यालय आकर उस तरह से मुखर नहीं रह पता जैसा कि विद्यालय आने से पूर्व था। बहुचर्चित पुस्तक 'बच्चे असफल कैसे होते हैं' में जॉन होल्ट ने एक महत्वपूर्ण विमर्श बिन्दु की ओर संकेत किया है "बच्चे स्कूलों में जिज्ञासा से भरे आते हैं, पर कुछ ही सालों में उनकी मुखर जिज्ञासा की मौत हो जाती है या कम से कम वह मौन तो हो ही जाती है।"[10] यह कथन बच्चे का स्कूल में समावेशन प्रक्रिया में बाधा को इंगित करता है। अन्य कारकों के साथ–साथ एक महत्वपूर्ण कारक समझ में आता है, वह यह है कि बच्चे कि भाषा एवं संस्कृति को विद्यालय/कक्षा–कक्ष में स्थान न मिल पाना।

प्रसिद्ध विचारक प्लूटो ने सहस्त्राब्दी पहले कहा था कि बच्चा दरअसल बड़ों के बीच में एक विदेशी की तरह होता है। जैसे आप किसी विदेशी से, जिसकी भाषा आपको न आती हो, जब आप बात करते हैं तो आपको मालूम होता है कि मेरी कई बातें वो ठीक से समझेगा, कई नहीं समझेगा या गलत समझ जाएगा और जब वो कुछ बोलता है, अपनी भाषा में बोलता है और उसको हमारी भाषा नहीं आती तो हम भी उसकी बात पूरी नहीं समझ पाते, कुछ समझते हैं, कुछ नहीं समझते हैं और इस तरीके से जो आदान–प्रदान होता है वह अधूरा ही रह जाता है। बच्चा जब पाँच–छह वर्ष की उम्र में विद्यालय आता है तो उसकी भाषा बोली के सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनीतिक संदर्भ होते हैं। चूंकि बच्चे की भाषा का विकास इन संदर्भों के वृहद परिप्रेक्ष्य में होता है, बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा की निर्मिति होती है। 'भाषा, निःसन्देह कला एवं संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी हुई है। विभिन्न भाषाएँ दुनियाँ को भिन्न तरीके से देखती हैं। इसलिए मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है या उसे किस प्रकार ग्रहण करता है, यह उस भाषा की संरचना से तय होता है। विशेष रूप से किसी संस्कृति के लोगों का दूसरों से बात करना.....बातचीत के तौर–तरीकों को भी प्रभावित करती है। लहजा, अनुभवों की समझ और एक ही भाषा के व्यक्तियों की बातचीत में अपनापन, यह सभी संस्कृति का प्रतिविम्ब और दस्तावेज है। अतः संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है।'[11] विद्यालय में प्रवेश के बाद, बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा को विद्यालय में स्थान नहीं दिया जाता/कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने के माध्यम के रूप में व्यवहरित नहीं किया जाता, इसके बजाय बच्चा विद्यालय की प्रथम भाषा हिन्दी भाषी क्षेत्रों में प्रायः हिन्दी भाषा होती है (जो वस्तुतः बच्चे के लिए दूसरी भाषा होती है) सीखना प्रारम्भ करता है। इस प्रक्रिया में बच्चे के भाषायी संदर्भों की जानेध्अनजाने उपेक्षा की जाती है। परिणामतः बच्चे की विद्यालयी पाठ्यचर्या/कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में सहज रूप से समावेशन में बाधा पहुँचती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में न्यूनतम प्रारम्भिक स्तर तक और उससे भी आगे तक बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा माध्यम से शिक्षण की पैरवी की गयी है। यह न केवल शिक्षणशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं वरन विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्य–धारा में समावेशन करने एवं इसमें बनाए रखने की दृष्टि से भी इसके गहन निहितार्थ हैं।

परिचर्चा

न्जोर्गे (2017)[12] ने कीनिया के प्रारंभिक विद्यालयों में मातृभाषा के माध्यम को विज्ञान एवं गणित विषयों के शिक्षण में उपयोगी पाया। उन्होंने पाया कि मातृभाषा के माध्यम से गणित विषय का शिक्षण करने में गणित सम्बन्धी शब्दावली के विकास में तथा उनको प्रत्यास्मरण (Recall) करना आसान होता है। मोस्च्कोविच (2002)[13] ने निर्देशन की भाषा (LOI) तथा गणित विषय में संप्राप्ति सम्बन्धी अपने अध्ययन में पाया कि अधिगमकर्ता की प्रथम भाषा (L1) (वस्तुतः जो उसकी मातृभाषा/घर की भाषा है दृइस पर अध्ययनकर्ता द्वारा बल दिया गया है) को एक संसाधन के रूप में व्यवहृत किया जाना चाहिए, जिससे गणितीय सम्प्रेषण (Numerical Communication) संभव हो सके। अध्ययन आधारित उनका अभिमत है कि बच्चों की भाषा एवं

शिक्षण की भाषा संसक्त (Connected) होनी चाहिए। इलियट एवं पैटन[14] ने अपने एक अध्ययन के आधार पर अभिमत दिया कि गणित एवं विज्ञान विषय को सीधे मातृभाषा माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए। वियतनाम में कक्षा 1 के मातृभाषा कार्यक्रम के अध्ययनरत 68 प्रतिशत बच्चों ने 'Excellent' स्तर प्राप्त किया, जबकि जो बच्चे मातृभाषा कार्यक्रम के अंतर्गत नहीं सीख रहे थे, में से केवल 28ः बच्चों ने यह स्तर प्राप्त किया (UNICEF, 2011)[15] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के गहन अनुशीलन, मातृभाषा माध्यम से शिक्षण एवं इसका विभिन्न विषयों की संप्राप्ति एवं प्रभाव संबंधी शोध अध्ययनों का विश्लेषण करने के साथ–साथ अपने कार्य–क्षेत्र के विद्यालयों के अवलोकन अनुभवों के आलोक में गहन रूप से महसूस होता है कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण के लिए नजरिए, कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में बदलाव जरूरी होंगे, इनमें से कुछ निम्नवत हैं–

1. मातृभाषा माध्यम से शिक्षणऔर परिणामी प्रभाव बहु–भाषी कक्षाएं– हमारे देश की भाषायी विविधता के कारण हमारी कक्षाएं बहु–भाषी होनी स्वाभाविक हैं। अगर ऐसा नहीं है तो कक्षा की संरचना/प्रक्रिया में कुछ न कुछ गड़बड़ी जरूर है। बच्चे की मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में स्वीकार करने से बहुभाषी–कक्षाओं को एक संसाधन के रूप में व्यवहृत किया जा सकता है। बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा माध्यम से शिक्षण के संदर्भ में वर्तमान में जो परिदृश्य सामने आता है और इसमें वांच्छित बदलाव को निम्न रेखाचित्र के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

रेखाचित्र–01
मातृभाषा माध्यम से शिक्षण हेतु नजरिए में जरूरी बदलाव

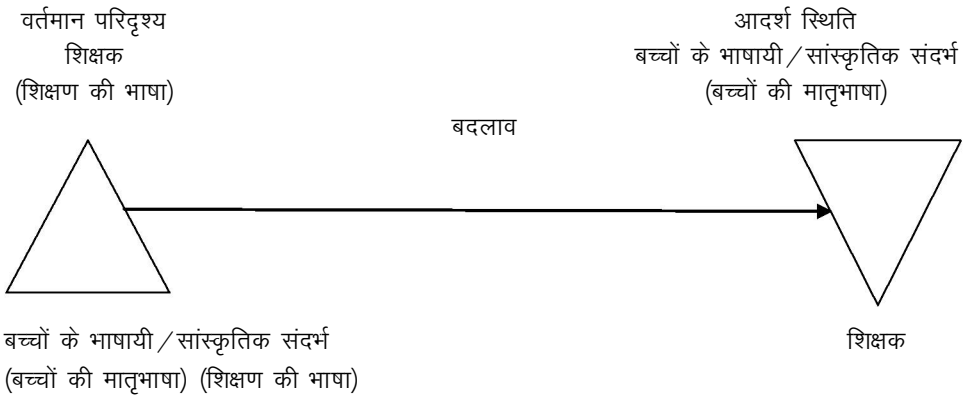

कक्षाओं में शिक्षण का जो वर्तमान परिदृश्य नजर आता है, उसमें अध्यापक एवं पाठ्य–पुस्तकें और निर्देशन की भाषा (Language of Instruction), (जो प्रायः बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा नहीं होती है।) मुख्य श्रोत दिखलायी पड़ते हैं, बच्चे के भाषायी संदर्भों का प्रायः संज्ञान नहीं लिया जाता। बच्चे की भाषा उसके विशेष सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संदर्भों में निर्मित होती है। "याद रखें कि भाषाएँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से

बनती है।"[16] मातृभाषा माध्यम से शिक्षण के लिए सबसे अहम है कक्षा–कक्ष में शिक्षक के नजरिए में बदलाव। कक्षा में बच्चों की मातृभाषा (L1) कक्षा में अंतःक्रिया संवाद की भाषा हो, यही विद्यालय में अनुदेश की भाषा (Language of Instruction) होनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस मुद्दे की गंभीरता को रेखांकित करते हुए कहती है कि 'यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते है। घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।'[17] विद्यालयी निर्देशन की भाषा बच्चे की मातृभाषा से भिन्न होने पर शिक्षणशास्त्रीय दृष्टि से दो मुद्दे सामने आते हैं, पहला–बच्चे की घर की भाषा को कक्षा–शिक्षण में समुचित स्थान देना, दूसरा–जो पहले का परिणाम है, कक्षा की बहुभाषिकता को एक समृद्ध संसाधन के रूप में व्यवहृत करना। वस्तुतः कक्षा की बहुभाषिकता के अंतर्गत बच्चे की मातृभाषा का मुद्दा भी आ जाता है। बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं और कौशलों के लिए बहुभाषिकता को एक उपयोगी संसाधन के रूप में व्यवहृत किया जा सकता है। "बहुभाषिकता, भारत की भाषिक विविधता एक जटिल चुनौती तो पेश करती ही है लेकिन यह एक प्रकार से अवसर भी देती है।"[18] बच्चे पर एकदम शुरुआत से विद्यालय की भाषा में (Language of Instruction-LOI) में पढ़ने–लिखने का दवाब डालना बच्चों के लिए न केवल तनाव एवं दुष्चिन्ता का कारण बन जाता है वरन विषयगत अवधारणाओं को समझने में कठिनाई प्रस्तुत करता है। इसका एक बड़ा नुकसान यह होता है कि बच्चे कि घर कि भाषा/मातृभाषा को विद्यालय भाषा के मध्य सेतु निर्माण के अवसर भी खत्म हो जाते हैं। बच्चा अपनी मातृभाषा/घर की भाषा लेकर विद्यालय आता है, विद्यालय में प्रथम भाषा (हिन्दी भाषी क्षेत्र में प्रायः यह हिन्दी होती है।) सीखना प्रारम्भ करता है। इस प्रक्रिया में बच्चे के भाषायी संदर्भों की जाने–अनजाने उपेक्षा की जाती है, विद्यालय की भाषा में विभिन्न विषयों की अवधारणात्मक समझ बनाने की प्रक्रिया सहज नहीं रह जाती, अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो विद्यालय की भाषा, बच्चों के संदर्भ से न जुड़ी होने के कारण बच्चे के लिए कोई अर्थ निर्मित करने में मददगार नहीं होती। अतः "बच्चे की घरेलू भाषा(एँ) स्कूल में शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए।"[19] मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा एवं इससे सृजित बहुभाषी कक्षाओं की अपरिहार्यता के दृष्टिगत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महत्वपूर्ण अनुशंसाएं की गयी हैं। 'जहां तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक लेकिन बेहतर यह होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे भी आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम घर कि भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। (इस प्रकार घर/मातृ/स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा के द्वंद्व पर विराम लगा दिया है।)..... .इसके बाद घर/स्थानीय भाषा को जहां भी संभव हो भाषा के रूप में पढ़ाया जाता रहेगा। सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के स्कूल इसकी अनुपालना करेंगे।'[20] शिक्षा एवं मातृभाषा माध्यम से शिक्षण के परिणामस्वरूप बहुभाषी कक्षाओं की जरूरत एवं क्रियान्वयन के तौर–तरीकों के बारे में स्पष्टता से कहा गया है कि 'जैसा कि अनुसंधान स्पष्ट रूप से दिखते हैं की बच्चे 2 और 8 वर्ष की आयु के बीच बहुत जल्दी भाषा सीखते हैं और बहुभाषिकता से इस उम्र के विद्यार्थियों को बहुत अधिक संज्ञानात्मक लाभ होता है।''[21] इसके लिए 'फाउंडेशनल स्टेज की

शुरुआत और इसके बाद से ही बच्चों को विभिन्न भाषा में (लेकिन मातृभाषा में विशेष जोर देने के साथ) एक्सपोजर दिये जाएँगे। सभी भाषाओं को एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाएगा, जिसमें बहुत सारी संवादात्मक बातचीत होगी, और शुरुआती वर्षों में पढ़ने और बाद में मातृभाषा में लिखने के साथ–साथ ग्रेड 3 और आगे की कक्षाओं में अन्य भाषाओं में पढ़ने और लिखने के लिए कौशल विकसित किए जाएंगे।'[22]

2. विद्यार्थी के संभावित/निकटवर्ती विकास क्षेत्र की पहचान करने एवं तदनुसार अनुसमर्थन की जरूरत–संभावित/निकटवर्ती विकास क्षेत्र (Zone of Proximal Development) विद्यार्थी के संज्ञानात्मक विकास का वह क्षेत्र है, जहां उसे मदद की जरूरत है, और यह मदद सही वक्त और सही तरीके से मिल सके तो विद्यार्थी संबन्धित विषय में अधिकतम बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। शिक्षक द्वारा विद्यार्थी/बच्चे को उपयुक्त समय पर मदद (Facilitation) मिल सके, इसके लिए यह जरूरी है कि विद्यार्थी/बच्चा अपनी समस्याओं और चुनौतियों को

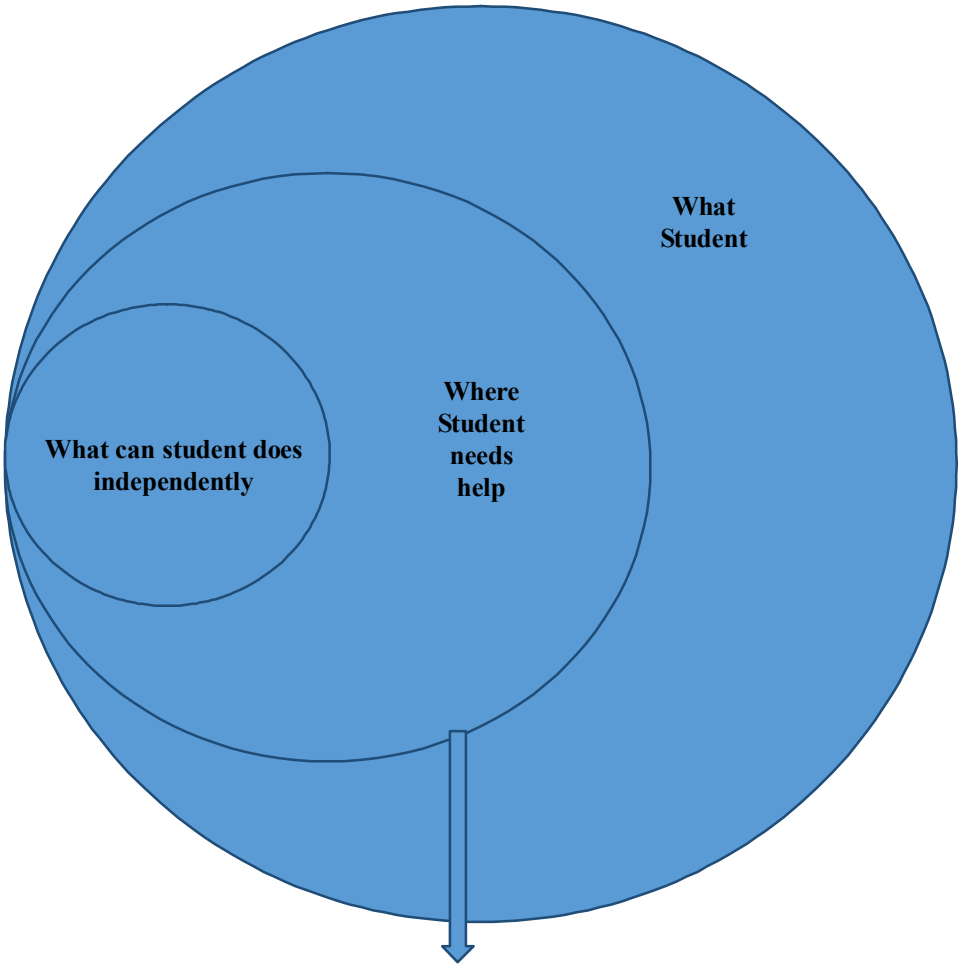

सहज भाषा में,स्पष्ट रूप से सामने रख सके, वस्तुतः यह बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा ही हो सकती है। शिक्षक भी तभी सुगमकर्त्ता की भूमिका का सफल निर्वहन कर सकते हैं जब वे बच्चों/विद्यार्थियों की घर की भाषा/मातृभाषा में अंतःक्रिया करने/संवाद करने में सक्षम हों।

संभावितधनिकटवर्ती विकास क्षेत्र (Zone of Proximal Development)

इस संभावित/निकटतम विकास क्षेत्र को जानने–समझने के लिए यह बहुत जरूरी है कि शिक्षक और विद्यार्थी के बीच अंतःक्रिया/संवाद विद्यार्थी कि मातृभाषा में हो। विद्यार्थी अपनी भाषा–बोली में विषय और उसकी अवधारणात्मक समझ में आने वाली चुनौतियों को आसानी से बता सकता है। यदि शिक्षण की माध्यम भाषा विद्यार्थी की मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा से भिन्न होगी तो न तो विद्यार्थी अपनी समस्याओं/चुनौतियों को शिक्षक तक पहुंचा सकेंगे और शिक्षक भी बच्चे की समस्याओं/चुनौतियों का अंदाजा/अनुमान लगाने में कठिनाई महसूस करेंगे।

3. बच्चे की घर की भाषाध्मातृभाषा को कक्षा में संवाद की भाषा के रूप में स्थापित करना– बॉल[23] का अभिमत है 'भाषा एवं साक्षरता सम्बन्धी वर्तमान शोध प्रतिवेदन बताते हैं कि समग्र सम्प्रेषण एवं संज्ञानात्मक विकास के साथ–साथ शैक्षिक संप्राप्ति के लिए बच्चे का अपनी भाषा में साक्षर एवं धारा–प्रवाह (Fluent) होना जरुरी है।' कक्षा में विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति, संप्राप्ति एवं समझ को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने में अध्यापक एवं विद्यार्थियों के मध्य प्रभावी संवाद की अहम भूमिका होती है। स्वाभाविक है कि बच्चे अपनी मातृभाषा/घर की भाषा में ही अच्छी तरह से अपनी बात को रख सकते हैं और शिक्षक की बात को सटीक सन्दर्भों में समझ सकते हैं। यदि शिक्षक भी अपनी माध्यम भाषा के रूप में बच्चे की भाषा को व्यवहृत कर सकें तो विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच प्रभावी संवाद स्थापित हो सकता है। इस तरह के संवाद से बच्चों को अपनी समझ/चुनौती को अभिव्यक्त करने में आसानी होगी और वहीं दूसरी ओर शिक्षक बच्चों की प्रगति का आकलन कर सकेंगे, आवश्यकतानुसार फीडबैक दे सकेंगे। प्रभावी संवाद में मातृभाषा/बच्चों की घर की भाषा की भूमिका को निम्नाकित रेखाचित्रों के माध्यम से स्पस्ट किया जा सकता है–

भाषा बच्चों के अर्थपूर्ण एवं सहभागी अधिगम वातावरण निर्माण में एक अहम भूमिका निभाती है। बच्चे की अपनी भाषा–बोली, उसको गलती करने के भय के बिना अभिव्यक्ति के अवसर देती है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में भाषा की केन्द्रीय भूमिका होती है। यह भाषा ही है जो शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य प्रभावी एवं अर्थपूर्ण संवाद स्थापित करने में बहुत हद तक सहायक होती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020[24] कुछ महत्वपूर्ण निर्देश देती है। मसलन–

अ– यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएंगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच यदि कोई अंतराल मौजूद हो तो उसे समाप्त किया जा सके।

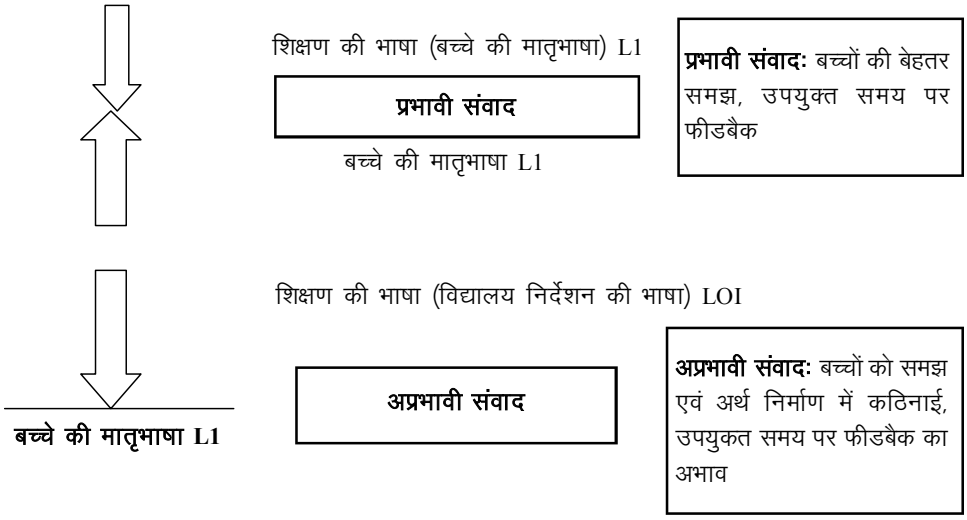

ब– शिक्षकों को उन छात्रों के साथ जिनके घर की भाषा/मातृभाषा शिक्षा के माध्यम से भिन्न है, द्विभाषी शिक्षण–अधिगम सामग्री सहित द्विभाषी एप्रोच का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

बच्चों की शिक्षा के शुरूआती वर्षों में शिक्षण का माध्यम पूरी तरह से मातृभाषा होनी चाहिए। बाद के वर्षों में बच्चे की मातृभाषा को केंद्र में रखते हुए विद्यालय निर्देश की भाषा की ओर बढ़ा जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर से या उसके बाद विद्यालय निर्देशन की भाषा को केन्द्रीयता मिलनी चाहिए परन्तु यहाँ पर भी विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा/मातृभाषाओं के अध्ययन के विकल्प मिलने चाहिए। इसके लिए आगे 'मातृभाषा (L1) से विद्यालय निर्देशन की भाषा (LOI) संक्रमणीय सम्मिश्र मॉडल' सुझाने का प्रयास किया गया है।

निहितार्थ एवं सुझाव

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 29 जुलाई 2020 को घोषित हुई है।आगामी समय में इसके लागू करने के क्रम में शासकीय एवं कार्यकारी निर्णय जाएँगे। अतः यह समीचीन प्रतीत होता है कि नवीनतम शिक्षा नीति की महत्वपूर्ण अनुशंसाओं को किस तरह से क्रियान्वित किया जाये? इस बारे में गंभीर विमर्श किया जाना चाहिए। 'कम से कम प्रारम्भिक स्तर और उससे भी आगे भी शिक्षा का माध्यम बच्चे की घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी'। शिक्षणशास्त्र और समावेशन दोनों ही दृष्टियों से इसके गहन निहितार्थ हैं। प्रस्तुत अध्ययन के क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विषयगत शोधों अध्ययनों एवं दस्तावेजों के गहन अनुशीलन के आधार पर निम्नांकित व्यवहारिक सुझाव देने का साहस किया जा सकता है–

विद्यालय की शुरुआती कक्षाओं (ग्रेड) में शिक्षण का माध्यम मुख्यतः मातृभाषा ही होनी चाहिए। धीरे–धीरे आगामी वर्षों में बच्चे की मातृभाषा (L1) और विद्यालय की निर्देशन की भाषा (LOI) का समुचित सम्मिश्र (Appropriate Mix) को व्यवहार में लाया जा सकता है। इसके

लिए मातृभाषा और विद्यालय की निर्देश की भाषा का संक्रमणीय सम्मिश्र मॉडल (Transitional Mix Model) निम्न तालिका 01 में सुझाया जाता है–

तालिका–01

मातृभाषा (L1) से विद्यालय निर्देशन की भाषा (LOI) संक्रमणीय सम्मिश्र मॉडल (Transitional Mix Model)

कक्षाएं	मातृभाषा माध्यम(L1)	मातृभाषा एवं विद्यालय निर्देश की भाषा का सम्मिश्र (Mixture of L1 & LOI)	विद्यालय निर्देश की भाषा(LOI)
बाल वाटिका	सभी कोर विषय (All core subjects)	–	–
कक्षा 1–5	सभी कोर विषय	परिवेशीय अध्ययन	अँग्रेजी
कक्षा 6–8	सभी कोर विषय	सभी कोर विषय	अँग्रेजी
कक्षा 9–10	मातृभाषा	सभी कोर विषय	विज्ञान,गणित, अँग्रेजी
कक्षा 11–12	मातृभाषाएँ	अन्य विषय	विज्ञान, गणित, अँग्रेजी, मानविकी विषय (छात्रों को माध्यम चयन की स्वतन्त्रता)

यह प्रस्तावित किया जाता है कि बाल वाटिकाओं में समस्त पठन–पाठन कार्य केवल बच्चों की मातृभाषा में होना चाहिए। प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से कक्षा 5 तक) में सभी कोर विषय मातृभाषा माध्यम से पढ़ाए जाने चाहिए और परिवेशीय अध्ययन विषय में क्रमशः विद्यालय की निर्देशन की भाषा माध्यम की ओर बढ़ना चाहिए। परिवेशीय अध्ययन विषय में कतिपय वैज्ञानिक संप्रत्ययों/अवधारणाओं की समझ के लिए ऐसा किया जाना जरूरी होगा परंतु यहाँ भी बार–बार संदर्भ हेतु बच्चों की मातृभाषा पुल की जरूरत बनी रहेगी, इस पुल के दोनों तरफ आवाजाही करनी होगी। अंग्रेजी विषय के रूप में विद्यालय की द्वितीय भाषा (वस्तुतः यह बच्चे के लिए तृतीय भाषा होगी) के रूप में पढ़ायी जानी है तो इसके लिए दो पुलों पर आवाजाही की जरूरत पढेगी। पहला अंग्रेजी एवं हिन्दी के बीच और दूसरा हिन्दी और बच्चे की मातृभाषा के बीच। कक्षा 9 एवं 10 बच्चे को अपनी मातृभाषा को एक विषय के रूप में पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए, सभी कोर विषय मातृभाषा एवं विद्यालय निर्देश की भाषा के समुचित सम्मिश्र माध्यम से पढ़ाए जाने चाहिए। विज्ञान, गणित एवं अंग्रेजी को विद्यालय निर्देशन की भाषा माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए परंतु यहाँ पर पुनः उल्लेख करना उचित होगा कि विद्यालय निर्देशन भाषा माध्यम से पढ़ने के विकल्प और बच्चे की मातृभाषा में आवाजाही की जरूरत बनी रहेगी। कक्षा 11 एवं 12 में बच्चों को एक से अधिक मातृभाषा (कक्षा में एक से अधिक मातृभाषा बोलने वाले विद्यार्थियों की मौजूदगी स्वाभाविक है) पढ़ने के विकल्प मिलने चाहिए। विज्ञान, गणित, अँग्रेजी, मानविकी विषय विद्यालय निर्देशन की भाषा माध्यम/अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने के विकल्प चयन की स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। किसी भी स्थिति में अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के ऊपर थोपा नहीं जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट किया गया है कि एक भाषा को अच्छी तरह से सिखाने के लिए इसे शिक्षण का माध्यम होने की जरूरत नहीं है। इसके गंभीर शैक्षणिक निहितार्थ हैं। लोक मानस में और बहुत हद तक नीति निर्धारकों में यह मान्यता प्रचलित है कि अंग्रेजी भाषा माध्यम से शिक्षण करने पर विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा में अच्छी पकड़ बन जाती है। संभवतः इसी मान्यता एवं विश्वास के आधार पर विगत वर्षों में उत्तराखंड में स्कूली शिक्षा में विज्ञान विषय को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने का निर्णय लिया गया। विद्यार्थियों की मातृभाषा से इतर अंग्रेजी विद्यार्थियों के लिए तृतीय भाषा (L3) के सदृश्य है। अतः विज्ञान विषय को अंग्रेजी माध्यम से सीखने में जहां एक ओर बच्चों को विज्ञान विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझने में कठिनाई महसूस हो रही है वहीं दूसरी ओर शिक्षकों को विद्यार्थियों से प्रभावी संवाद स्थापित करने में चुनौतियाँ पेश आ रहीं हैं। बच्चों की मातृभाषा (L1) के बजाय अंग्रेजी माध्यम (L3) से विज्ञान विषय का शिक्षण करने से विज्ञान विषय की विषयगत संप्राप्ति पर नकारात्मक रूप से असर पड़ा है। अतः बच्चे के शुरुआती कक्षाओं (कक्षा 8 तक) और संभव हो तो आगामी ग्रेड कक्षाओं तक विज्ञान विषय का शिक्षण बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा के माध्यम से शिक्षण किया जाना शिक्षणशास्त्रीय एवम समावेशन दोनों ही दृष्टियों से बहुत जरूरी प्रतीत होता है। जहां तक अँग्रेजी भाषा में बच्चे की प्रवीणता का प्रश्न है, भाषा वस्तुतः अर्जित की जाती है, कौशलों का अभ्यास करके इसमें प्रवीणता प्राप्त की जा सकती है, भाषागत प्रवीणता/कुशलता प्राप्त हो जाने के बाद अँग्रेजी भाषा को विज्ञान शिक्षण का माध्यम बनाया जा सकता है। भाषा सीखने की एक विशिष्ट प्रक्रिया होती है, किसी विषय को सीखने में माध्यम के रूप में भाषा को बरतना अलहदा बात है। वस्तुतः यह उम्मीद करना कि विज्ञान विषय का अँग्रेजी माध्यम से शिक्षण करने पर बच्चे अँग्रेजी भाषा में भी कुशलता/प्रवीणता प्राप्त कर लेंगे, शिक्षणशास्त्रीय एवं समावेशी दोनों ही नजरिये से उचित नहीं है।

मौजूदा समय में,हमारे देश में शिक्षक शिक्षण/प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की तैयारी के क्रम में मातृभाषा माध्यम में शिक्षण अभ्यास–अनुभवों का अभाव है और इसी कारण से शिक्षक–प्रशिक्षुओं को बहु–भाषी कक्षाओं के शिक्षण के व्यावहारिक अनुभव प्राप्त नहीं हो पाते हैं। वस्तुतः कक्षा में बच्चों की मातृभाषा को माध्यम के रूप में स्वीकार करने से कक्षाओं का स्वरूप स्वभावतः बहु–भाषिक हो जाता है। अतः शिक्षकों के सेवा–पूर्व एवं सेवा–कालीन दोनों ही प्रशिक्षणों में बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा माध्यम से शिक्षण के वास्तविक एवं व्यावहारिक अनुभव मिलने बहुत जरूरी हैं, इसके साथ ही बच्चों की मातृभाषा को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में माध्यम के रूप में व्यवहृत करने के व्यवहारिक अभ्यास के अनुभव भी मिलने चाहिए। इस संदर्भ में एक अनुभव साझा करना उपयुक्त होगा। उत्तरकाशी निवासी एक शिक्षक–प्रशिक्षु, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान बागेश्वर से प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात बागेश्वर जनपद के सूदूर ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षक नियुक्त हुए। उन्होने एक बार मुलाकात में, शिक्षण चुनौतियों के बारे में बताया कि वे स्वयं बच्चों की मातृभाषा न तो समझ सकते हैं और न ही बच्चे शिक्षक की मातृभाषा (उनकी मातृभाषा जौनसारी–गढ़वाली है) समझ पाते हैं। शिक्षक 'हिन्दी' और अपनी मातृभाषा में सहज हैं परंतु बच्चों के लिए ये दोनों ही सहज एवं बोधगम्य नहीं थी।

उन्होने बहुत समय तक इस चुनौती का सामना किया। विमर्श के बाद, बच्चों की मातृभाषा को सीख–समझकर इस चुनौती को हल करने का प्रयास किया और बहुत हद तक कामयाब रहे। अद्यतन वस्तुस्थिति मुझे मालूम नहीं है। इस अनुभव के दो शैक्षणिक निहितार्थ हैं। पहला–बच्चों की शुरुआती कक्षाओं में शिक्षण माध्यम के रूप में बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा कितनी अहम है और दूसरा–प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षक/शिक्षकों की नियुक्ति के समय इस बात का संज्ञान लिया जाना कितना जरूरी है कि शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के साथ, उनकी मातृभाषा/घर की भाषा में संवाद करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण के संस्थानों को अपनी भाषा लैब/पुस्तकालय में बच्चों की मातृभाषा को सम्मानजनक स्थान देना चाहिए, इस तरह की भाषा लैब/पुस्तकालय, मातृभाषा माध्यम से संचालित कक्षाओं/बहुभाषी–कक्षाओं की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए संदर्भ/संसाधन केंद्र की अहम भूमिका का निर्वहन कर सकेंगे।

बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा माध्यम से शिक्षण करने में शिक्षकों के सामने एक महत्वपूर्ण चुनौती यह सामने आती है कि माध्यम मातृभाषा में पाठ्य–सामाग्री, शब्द–कोश, अनूदित सामाग्री का अभाव है। इस संदर्भ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020[25] निम्न अहम निर्देश देती है–

अ– विज्ञान सहित सभी विषयों में उच्चतर गुणवत्ता वाली पाठ्य पुस्तकों को घरेलू भाषाओं/मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा।

ब– ऐसे मामलों में जहां घर की भाषा की पाठ्य–सामग्री उपलब्ध नहीं है, शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद की भाषा भी जहां तक संभव हो, घर की भाषा बनी रहेगी।

भारत जैसे बहु–भाषी देश में यह बहुत कठिन भी जान पड़ता है परंतु कम से कम इतना तो किया ही जा सकता है कि बच्चों की मातृभाषा के तकनीकी एवं जटिल शब्दावली के भाव–अर्थ से शिक्षक परिचित हो सकें। इसके लिए जनपद के शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मातृभाषा शब्द–कोश विकसित करने की पहल कर सकते हैं और इसका उपयोग शिक्षक प्रशिक्षणों मे, जनपद के लिए संदर्भ के लिए किया जा सकता है। एक जनपद विशेष में इस तरह के शब्द–कोश विकसित करना शक्य भी है। प्रायः होता यह है कि जब हम एक शिक्षक के रूप में भिन्न भाषा–भाषी परिवेश में काम करना शुरू करते हैं तो अपने दैनिक काम–काजी जीवन के सफलतापूर्वक निर्वहन करने के लिए स्थानीय भाषा–बोली में संवाद करना हमारी आवश्यकता बन जाती है, शनैः–शनैः उस भाषा को सुनने–समझने का कौशल आ जाता है, बस बोलने के लिए बच्चों कि मातृभाषाध्घर की भाषा/स्थानीय भाषा के तकनीकी और जटिल शब्दों कि जानकारी/अभ्यास की जरूरत पड़ती है। अतः यह बहुत ही जरूरी है कि यह शब्द–कोश जनपद के प्रत्येक विद्यालय में उपलब्ध रहे।

इस बात पर अकादमिक, नीतिगत एवं शिक्षणशास्त्रीय विमर्श इस बात पर एकमत हैं कि बच्चों की सिखाने–सीखने की प्रक्रिया 'बाल केन्द्रित' होनी चाहिए। इसके लिए बहुत सी

प्रक्रियाएं, सिद्धांत एवं तरीके सुझाए गया हैं, जो बतलाते हैं कि बच्चे की शिस्खिक जरूरतें, इसके केंद्र में होनी चाहिए। यह तभी संभव है, जब शुरूआती ग्रेड में शिक्षण का माध्यम, बच्चे की मातृभाषा हो। बच्चा अपनी मातृभाषा में अपनी सीखने की चुनौतियों को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त कर सकता है, शिक्षक भी उसकी मातृभाषा में संवाद करके बेहतर ढंग से फीडबैक देकर उसकी मदद कर सकते हैं।

कक्षा में बच्चों की मातृभाषा/घर की भाषा व्यवहृत करने पर विषय, विषय संबन्धित पाठ की अवधारणाओं की बेहतर समझ विकसित कर सकते हैं। इसका एक अन्य लाभ यह भी होता है कि संबन्धित विषय–पाठ से संबन्धित गृह–कार्य को बिना किसी मदद/बहुत कम सहायता से स्वतंत्र रूप से पूर्ण कर सकते हैं। विद्यालयों/शिक्षकों की बहुधा शिकायत रहती है कि बच्चों के माता–पिता/अभिभावक बच्चों के गृह–कार्य में सहयोग नहीं करते हैं, विद्यालय के निर्देशन की भाषा में सहज न होने के कारण ऐसा होता है। यदि बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाया जाता है तो माता–पिता/अभिभावक बच्चे की मदद करने में समर्थ होंगे, उसकी अकादमिक प्रगति से अवगत हो सकेंगे। वस्तुतः बच्चे कि मातृभाषा/घर की भाषा एक मजबूत पुल का काम करेगी। इसका परिणामी लाभ यह होगा कि अभिभावक/समुदाय विद्यालय से जुड़ाव अनुभव करेंगे।

मातृभाषा आधारित बहुभाषी कक्षाओं में काम कर रहे शिक्षक/शिक्षिकाओं के अनुभवों एवं चुनौतियों को समझने और इनके समाधान खोजने के लिए समय–समय पर सेमिनार/संगोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिए। जिससे उपयोगी अनुभवों की प्रतिकृतियाँ (Replication) अपनायी जा सकें, चुनौतियों का व्यवहार्य हल खोजने की दिशा में आगे बढ़ा जा सके।

विद्यार्थियों की मातृभाषा/घर की भाषा को कक्षा–कक्ष प्रक्रियाओं में स्थान देने के लिए उदार दृष्टिकोण एवं लचीला रुख अपनाने की आवश्यकता है। कक्षा–कक्ष में बच्चे का सही अर्थों में समावेशन तभी संभव हो सकेगा, जब बच्चे अपनी सांस्कृतिक एवं भाषिक पहचान एवं अस्मिता के साथ कक्षा में स्वीकारे जाएँ। इसके लिए बच्चे की मातृभाषा/घर की भाषा एक बहुमूल्य निवेश साबित हो सकती है। मटंग (2003)[26] ने अपने एक अध्ययन के अनुभवों के आलोक में कहा कि बच्चों की गणित में अभिरूचि को बढ़ाने एवं जो वे सीख रहे हैं, उसकी अर्थपूर्ण समझ विकसित करने के लिए उनकी संस्कृति को गणित विषय में समाहित (Embedded) करने की जरूरत है। भाषा बच्चों की संस्कृति का अहम पहलू है। यदि हम अच्छे परिणामों की अपेक्षा करते हैं तो बच्चे की भाषा की उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

आभार

इस शोध आलेख को लिखने के लिए निरंतर मार्गदर्शन और अभिप्रेरण के लिए प्रो0 दीपक पालीवाल जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। इसके अभाव में कदाचित यह संभव नहीं हो पाता।

संदर्भ

1. ASER (2022), https://www-asercentre-org>survey, Retrieved at 10-00 P.M., as on 19 February, 2023.
2. UNESCO, (2010), Reaching the marginalized world (Education Position Paper), Parism France, UNESCO.
3. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–20.
4. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–8.
5. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–40.
6. Lee, S., Watt, R. & Frawley, J. (2015). Effectiveness of bilingual education in Combodia: a longitudinal comparative case study of ethnic minority children in bilingual and monolingual schools- Compare, A Journal of Comparative and International Education. 45(4), 524-44.
7. Effiong N. (2013). Factors influencing foreign language classroom anxiety: An investigation of English learners in four Japanese Universities, University of South Hampton.
8. Stoblein, M., & Changchun, P. (2009). Activity based Learning Experiences in Quantitative Research Methodology for (Time Constrined) Young Scholars-Course Design and Effectiveness. Paper Presented at the POMS 20th Annual Conference, Oreland, Florida. USA.
9. Gorgorio, N., & Planas, N., (2011). Teaching Mathematics in Multilingual Classrooms- Educational Studies in Mathematics, 47(1), 7-33.
10. कुशवाहा, पू. या. (1993). बच्चे असफल कैसे होते हैं, जॉन होल्ट, हिन्दी अनुवाद– पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा, एकलव्य प्रकाशन, अरेरा कॉलोनी, ई0 एच0 7ध 453, भोपाल, म0 प्र0.
11. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–88।
12. Njorge, M.C. (2017). The Efficacy of Using Mother Language in the Teaching of Mathematics and Science in Primary Schools: Evidence from Grade One Classrooms in Kenya.
13. Moschkovich, J. (2002). A situated and socio-cultural perspective on bilingual Mathematics learners- Mathematical thinking and learning, 4(2-3), 189-212.
14. Elliot, R.W. & Paton, V.O. (2018). International Journal of Educational Development, 61, DDD Journal homepage:www-elseviey-com/
15. UNICEF, (2011). Action research on mother tongue based bilingual education: Achieving quality, equitable education- http://www-un-one-un-org.
16. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, (2006), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, प्रथम संस्कारण मई 2006, प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110016, पृष्ठ–41.
17. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–20.

18. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, (2006), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, प्रथम संस्करण मई 2006, प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली–110016, पृष्ठ–41.
19. वही, पृष्ठ–42.
20. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–20.
21. वही.
22. वही, पृष्ठ–21.
23. Ball, J. (2010). Enhancing The Learning of Children From Diverse Language Background Mother Tongue-Based Bilingual or Multi Lingual Education In The Early Years, UNESCO. http://unesdoc-unesco-org/Imag.
24. भारत सरकार, (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ–20.
25. वही.
26. Matang, R. (2003). The Cultural Context of Mathematics Learning and thinking in Papua New Guinea. Education for 21st Century in Papua New Guinea and South Pacific, 961-168.